सीढ़ी

No.	Murli/Avyakt Vani Points	Download
1	बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है।... बच्चे जो विचार-सागर-मंथन कर ऐसे-2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनको शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है।(मु.29.2.76 पृ.2 अंत 3 आदि)	Download
2	सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का, जिन्न की भी कहानी बताते हैं। यह सभी दृष्टांत आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं।(मु.18.11.70 पृ.2 अंत)	Download
3	फॉरेनर्स इतना सीढ़ी से नहीं समझ सकते हैं। जितना चक्र और झाड़ से। (मु.14.3.68 पृ.1 मध्य)	Download
4	क्रिश्चियन और कृष्ण की रास मिलती है। (मु. 1.5.73 पृ.3 अंत)	Download
5	क्राइस्ट के कृष्ण के साथ भेंट करते हैं। बुद्ध की नहीं। (मु.6.8.73 पृ.1 मध्य)	Download
6	84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अंत तक पार्ट है। (मु.11.3.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
7	हीरे जैसा जन्म सतयुग में नहीं कहेंगे। हीरे जैसा इस समय है; क्योंकि इस समय तुम ईश्वरीय संतान हो। (मु.26.10.72 पृ.1 अंत)	Download
8	आप सबका वायदा है कि हम बाप द्वारा 21 जन्मों के लिए जीवनमुक्त अवस्था का पद प्राप्त कर रहे हैं, करेंगे ही।... 21 जन्म में एक जन्म संगम का है। आपका वायदा 21 जन्मों का है, 20 जन्मों का नहीं है।(अ.वा.18.1.08 पृ.2 अंत)	Download
9	मनुष्य 21 जन्म कहते, गायन भी करते। अभी यह ईश्वरीय जन्म एक अलग अकेला है। 8 सतयुग, 12 त्रेता, 21 द्वापर, 42 कलियुग। यह एडॉप्टेड तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सबसे ऊँच मिला है। तुम ब्राह्मणों का ही यह सौभाग्यशाली जन्म है। (मु.11.12.78 पृ.3 अंत)	Download
10	तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिन्स बनेंगे।... इन पास कुछ भी नहीं है। बेगर अर्थात् जिनके पास कुछ भी न हो। (मु.30.5.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
11	100 साल'(मु.3.11.76 पृ.3 मध्य)	Download
12	यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी बननी है। इनमें बड़ा क्लीयर कर लिखना है। ऊपर में लिखना चाहिए- विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति और नीचे जहाँ साधु-समाज आदि-2 हैं वहाँ लिखना चाहिए- विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। यह अक्षर ज़रूर डालना चाहिए। (मु.6.10.71 पृ.2 अंत)	Download
13	विनाश काले विपरीत बुद्धि क्यों कहते। क्योंकि प्रीति बिल्कुल नहीं है। और ही बेहद के बाप के दुश्मन बन पडे हैं। (मु.15.10.78 पृ.1 अंत)	Download
14	विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जबसे स्थापना के कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञकुंड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-2 है ना! तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को। (अ.वा.3.2.74 पृ.13 अंत)	Download
15	माताओं का सबसे बड़ा पेपर ही मोह का है। अगर माताएँ नष्टोमोहा हो गईं तो नम्बर आगे हो जाएँगी।(अ.वा.5.6.77 पृ.216 अंत)	Download
16	प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई पुरुषोत्तम सृष्टि रची जाती है। पुरुषोत्तम तुमको वहाँ देखने में आवेंगे।(मु.1.10.75 पृ.1 मध्य)	Download

17	पुरुषोत्तम वर्ष, पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम दिन भी इस पुरुषोत्तम संगम पर ही होता है। पुरुषोत्तम बनने की पुरुषोत्तम घड़ी भी इस पुरुषोत्तम युग में है। यह बहुत छोटा लीप युग है। (मु.4.5.74 पृ.2 मध्य)	Download
18	इस समय जो कुछ भी प्रैक्टिकल में होता है उनके फिर भक्तिमार्ग में त्योहार मनाए जाते हैं। (मु. 26.8.69 पृ.1 अंत)	Download
19	वहाँ (त्रेतायुग में) राम को 4 भाई तो होते नहीं। वहाँ तो बच्चा भी एक होता है। 4 बच्चे तो होते नहीं। (मु.29.9.77 पृ.1 मध्य)	Download
20	भारतमाता (शिव) शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। (अ.वा. 21.1.69 पृ.24 आदि)	Download
21	रुद्रमाला बाद होती है विष्णु की माला।.....यह रुद्रमाला फिर विष्णु की माला में पिरोनी है यानी विष्णु के राज्य में जाते हैं। (मु.20.2.72 पृ.3 आदि)	Download
22	जो बाहर वाले गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं यहाँ वालों से बहुत तीखे चले जाते हैं। (मु.18.11.68 पृ.2 अंत)	Download
23	तुमको रुद्रमाला में पिरोना है।.....यह है रुद्रमाला और ज्ञानी तू आत्माओं की माला। (मु.8.3.73 पृ.3 मध्य)	Download
24	तुम जान गए हो सबसे पार्ट अच्छा उनका है जो पहले शिव की रुद्रमाला में हैं। नाटक में जो बड़े अच्छे-2 एक्टर्स होते हैं, उनकी कितनी महिमा होती है। सिर्फ उनको देखने लिए लोग जाते हैं। (मु.20.2.71 पृ.1 मध्यादि)	Download
25	विजयमाला के मणके बनना बड़ी बात नहीं है; लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना यही खुशनसीबी है। (अ.वा.20.5.74 पृ.47 आदि)	Download
26	(संगमयुगी) राधे-कृष्ण तो प्रिंस-प्रिंसेज थे। दोनों अपनी-2 राजधानी में रहते थे। ज़रूर स्वयंवर होगा (जैसा कि सीढ़ी के चित्र में ऊपर विजयमाला लिये हुये राधा को कृष्ण के सामने दिखाया भी गया है)। राधे-कृष्ण का (अपना) राज्य तो है नहीं। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराना है। चंद्रवंशी में तो सूर्यवंशी कृष्ण आ न सके (क्योंकि ऊँच कुल का है)। तो बड़ी मूँझ हो गई है। (मु.10.5.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
27	कलियुग में भी जो रीति-रसम होते हैं वह सभी यहाँ संगम पर किस न किस रूप में होते हैं। (अ.वा.14.5.70 पृ.2 अंत)	Download
28	राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर उनके साथ प्यार हो गया। ऐसे नहीं, राधे-कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे। नहीं, अलग-अलग थे। राधे आती थी, फिर स्वयंवर हुआ। राधे-कृष्ण कोई भाई-बहन नहीं थे, दोनों अलग-2 अपनी-2 राजधानी में थे। (मु.14.7.73 पृ.3 मध्य)	Download
29	ल.ना. और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, अलग-2 राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों आपस में भाई-बहन थे। वह अलग अपनी राजधानी में थी, वह अलग अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो ल.ना. बनते हैं। (मु.26.10.73 पृ.2 मध्य)	Download
30	राधे-कृष्ण ही फिर ल.ना. बने हैं; परंतु वह बच्चे किसके थे, यह किसको पता नहीं है। कृष्ण की महिमा की है, राधे की कहाँ है! दोनों अलग-2 गाँव के प्रिंस-प्रिंसेज़ थे। ..... बगीचे में घूमने-फिरने जाती थी। फिर ड्रामा अनुसार उन्हों की आपस में दिल लगती है और सगाई हो जाती है। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर बाद ल.ना. बनते हैं। (मु.13.11.71 पृ.2 अंत)	Download
31	द्वापर में कृष्ण के साथ कंस, जरासिंधी आदि बैठ दिखाए हैं। वास्तव में इस समय सब हैं राक्षस सम्प्रदाय। (मु.10.10.73 पृ.3 मध्य)	Download

32	देवकी को आठवाँ नम्बर श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब आठवाँ नम्बर कृष्ण जन्म लेगा कब?.....सतयुग में। ..... सतयुग में कृष्ण के माँ-बाप को 8 बच्चे तो होते नहीं।.....फिर दिखलाते हैं उनका बाप उनको नदी से पार ले जाता था। (मु.18.8.72 पृ.2 मध्यादि, 3 अंत)	Download
33	(सीढ़ी में ऊपर) कृष्णपुरी और (नीचे) कंसपुरी। दिखलाते हैं कृष्ण को (विषय-वैतरणी नदी-यमुना के) उस पार ले गए। है इस संगम की बात। कृष्ण को उस पार नहीं ले गए। यह तो बेहद (ज्ञान) की बात है। अभी हम उस पार जा रहे हैं ना। (मु.17.11.72 पृ.3 आदि)	Download
34	उनको कहा जाता है गाँवरे का छोरा। तो ताज कहाँ से हो सकता ! गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना। (मु.8.2.70 पृ.2 मध्य)	Download
35	बाबा बैठ ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों, ग्रंथों का सार बताते हैं। (मु.31.7.73 पृ.2 अंत)	Download
36	मंसा में तूफान तो बहुत आवेगा; परन्तु कर्मेन्द्रियों से न करना है। कर्मेन्द्रियों से कर बैठे तो उन कर्मेन्द्रियों को काटा जावेगा। वह अंग काटा जावेगा। अगर दान देकर फिर किस पर क्रोध किया तो वहाँ जबान काटी जावेगी। धर्मराज बाबा घड़ी-2 इन्द्रियाँ कटवाते जावेंगे। (मु.14.4.73 पृ.2 मध्य) □	Download
37	योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश। (मु.11.2.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
38	अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना। ऐसे जो माँ-बाप की आबरू गंवाते होंगे उनको फिर क्या पद मिलेगा। (मु.2.1.73 पृ.4 अंत) □	Download
39	बाप कहते हैं मैं सदैव परमधाम का रहने वाला हूँ। यह पुरानी दुनियाँ में आकर तुमको वरसा देता हूँ; फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब गाया हुआ है कि - सद्गुरु का निन्दक सूर्यवंशी राज्य में ठौर न पा सके। (मु.13.11.72 पृ.3 मध्य)	Download
40	बाबा कहे यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें तो हर प्रकार की(के) चाहिए ना। (मु.10.12.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
41	गाया भी जाता है सतयुग में सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी। जैसे क्रिश्चियन घराने में एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलता है। वैसे वहाँ भी लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड ऐसे 8 डिनायस्टी चलती है। (मु.26.4.71 पृ.2 मध्य)	Download
42	कृष्ण की 8 डिनायस्टी चलती है। पहले कहेंगे प्रिंस ऑफ सतयुग। फिर बनता है किंग ऑफ सतयुग। 8 पीढ़ी उनकी पहले चलती है। उस समय तो दूसरे राजाएँ होते नहीं। (मु.6.9.81 पृ.2 अंत)	Download
43	लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, दी सेकण्ड, थर्ड । आठ बादशाही चलती है। बच्चे राज्य करते हैं। सीता-राम का भी ऐसे चलता है। (मु.31.7.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
44	यह अभी जानते हैं हम सो ल.ना. बनते हैं, हम सो राम-सीता बनेंगे। (मु.25.5.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
45	84 जन्मों की चढ़ती कला (रामराज्य) और उतरती कला (रावणराज्य) उन दोनों के संस्कार इस (संगम के) समय आत्मा में भरते हो। (अ.वा.30.5.73 पृ.78 आदि)	Download
46	वास्तव में गुरु तो एक ही होता है सद्गति के लिए। बाकी सभी हैं दुर्गति के लिए। (मु.11.3.69 पृ.1 मध्य)	Download
47	यह ढिंढोरा पिटवाते रहो- एक सद्गुरु निराकार द्वारा सद्गति, अनेक मनुष्य गुरुओं द्वारा दुर्गति। (मु.11.3.69 पृ.1 अंत)	Download
48	रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में ही लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्रॉविंस (ज़ोन) अलग कर देते हैं। (मु.8.8.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
49	त्रेता और द्वापर के संगम पर रावण आते हैं जबकि देवी-देवताएँ वाममार्ग में गिरते हैं। (मु.10.10.68 पृ.1 अंत)	Download
50	देवी-देवताएँ वाममार्ग में आते हैं तो सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं। (मु.19.8.73 पृ.1 मध्य)	Download

51	भक्तिमार्ग में सोमनाथ का मंदिर बनता है। सो भी कुछ समय बाद में बनता होगा, फिर पूजा शुरू होगी। (मु.24.8.73 पृ.2 मध्य)	Download
52	गुजरात में बापदादा ने सेन्टर खोला है। गुजरात ने नहीं खोला है। इसलिये न चाहते भी सहज ही सहयोग का फल निकलता ही रहेगा। आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। धरनी सहयोग के फल की है। (अ.वा.12.12.83 पृ.45 आदि)	Download
53	जो सम्पूर्ण निर्विकारी होकर जाते हैं उनके मंदिर बनाकर विकारी लोग उनकी जाकर पूजा करते हैं। (मु.16.10.73 पृ.1 आदि)	Download
54	पूजा भी पहले-2 तुमने शिव की की है। तब ही तो सोमनाथ का मंदिर बनाया है। (मु.11.2.68 पृ.3 मध्य)	Download
55	बाबा तो कहते छत जितनी बड़ी सीढ़ी बनाओ। ऐसे ट्रान्सलाइट हो जो क्लीयर दिखाई पड़े। तो मनुष्य देख वंडर खावें। (मु.11.2.68 पृ.3 अंत)	Download
56	बहुत चित्र होने से मनुष्यों का खयालात सारा चित्रों में ही चला जाता है। .....पहाका है न टू मैनी क्वीन्स....। (मु.23.2.69 पृ.2 अंत)	Download
57	चित्र आदि जो भी बनाये हैं बेसमझी के। (मु.13.3.71 पृ.2 मध्य)	Download
58	आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। (मु.5.5.68 पृ.1 मध्य)	Download
59	प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। ..... फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु.13.6.72 पृ.2 अंत)	Download
60	ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते, फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे, तब फिर शास्त्र बनावें। टाइम लगता है। दो/पाँच सौ वर्ष बाद में बैठ शास्त्र बनाए हैं। (मु.9.8.64 पृ.3 अंत)	Download
61	भक्तिमार्ग में पहले सर्वशास्त्रमयी शिरोमणी गीता ही बनती है। गीता के साथ फिर भागवद, महाभारत भी है। यह भक्ति भी बहुत समय के बाद शुरू होती है। आस्ते-2 मंदिर ठिकाने शास्त्र बनेंगे। 3/4 सौ वर्ष लग जाते हैं। (मु.2.9.72 पृ.1 मध्य)	Download
62	जीवन कहानी में ही नाम बदल लिया है। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। (मु.7.8.74 पृ.3 आदि)	Download
63	गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है। संगम होने कारण यह भूल कर दी है। (मु.8.7.73 पृ.2 मध्य)	Download
64	भारत को पूरा कलंकित कर दिया है। ..... इतनी रानियाँ थीं, उनको भगाया, मक्खन चुराया, इतने बच्चे थे। वास्तव में यह सभी है प्रजापिता ब्रह्मा की कहानी। उसके बदली कृष्ण को रख दिया है। (मु.5.5.73 पृ.1 आदि,अंत)	Download
65	मटकी फोड़ी माखन खाया यह सब उसके लिए झूठ बोलते हैं। (मु.23.8.68 पृ.3 आदि)	Download
66	भक्तिमार्ग में आधा कल्प से लेकर किसम-किसम के शास्त्र पढ़ते आए हैं। तुम यह छोटी किताब आदि छपाते हो मनुष्यों को समझाने लिए। (मु.12.2.69 पृ.1 अंत)	Download
67	दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं! (मु.24.5.64 पृ.1 मध्यांत)	Download
68	पूजा भी पहले शुरू होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते हैं। उनके मंदिर बनाते हैं, फिर ल.ना. के बनावेंगे।... फिर राम-सीता के मंदिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में देखो- गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि-2 का अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं। (मु.9.2.71 पृ.2 आदि)	Download
69	जो हर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसकी पूजा भी हर कर्म की होती है। (अ.वा.30.11.92 पृ.108 अंत)	Download
70	जो कर्म याद में रहकर करते हैं वह कर्म यादगार बन जाता है। (अ.वा. 30. 06. 73. पृ. 117 आदि)	Download

71	इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है। .... इनका चित्र रखने की भी दरकार नहीं। (मु.27.2.70 पृ.2 आदि)	Download
72	भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के (सच्चे-2) मंदिर (अर्थात् सेवाकेंद्रों और संगमयुगी भक्तों के घर-2) में जाओ तो वहाँ और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। सभी के आगे सर झुकाते रहते हैं। (मम्मा-बाबा-दीदी-दादी आदि देहधारी) गुरुओं की भी मूर्ति बनाकर रखते हैं। (मु.29.2.68 पृ.2 मध्य)	Download
73	कनिष्ठ हैं दैत्य। कनिष्ठ मनुष्य बैठ उत्तम मनुष्यों की महिमा गाते हैं। मंदिर बनाकर ताज वालों को बिगर ताज वाले नमन करते हैं। सीढ़ी में शायद कुछ ऐसा है चित्र। (मु.7.3.74 पृ.2 आदि)	Download
74	दैवी गुणों वाले मनुष्य थे। अभी आसुरी गुणों वाले (असुर या जानवर) बनते हैं। और कोई फर्क नहीं है। पूँछ वाला वा सूँढ़ वाला मनुष्य होता नहीं है। देवताओं की सिर्फ यह (जानवरियत की) निशानियाँ हैं। (मु.15.12.68 पृ.2 अंत)	Download
75	पहले अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। (जड़) शरीरों की भी पूजा करते। इनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर पांच भूतों का बना है। (मु.25.7.76 पृ.2 मध्य)	Download
76	तुम जानते हो जो हमको ऐसा बनाते हैं उनकी पूजा होगी। फिर हमारी भी पूजा होगी नम्बरवार। फिर गिरते-2 5 तत्वों की भी पूजा करने लग पड़ते हैं। शरीर 5 तत्वों का है। 5 तत्वों की पूजा करो या शरीर की करो बात एक ही हो जाती। (मु.9.1.69 पृ.2 मध्य)	Download
77	कई हट्टी-कट्टी ब्राह्मणियाँ कपड़े भी धुलवाती हैं। बर्तन भी साफ़ करवाती हैं। वास्तव में उनको सभी कुछ अपने हाथ से करना है। तबीयत की बात अलग है। यहाँ सभी सुख ले लेंगे तो वहाँ (अब आने वाले संगमयुगी 21वें हीरे तुल्य सर्वश्रेष्ठ जन्म में) सुख गँवा देंगे। यहाँ ही नवाब बन जाते हैं। (मु.26.10.76 पृ.3 अंत)	Download
78	सर्विस से यहाँ सुख लेंगे तो वहाँ का सुख कम हो जावेगा। (मु.16.1.67 पृ.3 आदि)	Download
79	कोई-2 हेड ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियाँ रखती हैं। बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो। उनको बाबा देहअभिमानी समझते हैं। बाप कितना निरअहंकारी है। बच्चों को बड़ा म्यूजियम मिल जाता है तो बस हुकुम चलाने शुरू कर देते हैं। जैसे रानी होकर चलती हैं। (मु.12.11.68 पृ.2 अंत)	Download
80	ऐसी भी बहुत ब्रह्माकुमारियाँ हैं जो भक्तिमार्ग बैठ सिखलाती हैं। जैसे साधु-संत करते हैं। कृष्ण की मूर्ति रख उनको माथा टेका। ब्रह्माकुमारियों के आगे भी माथा टेका। कुछ न कुछ आमदनी मिली। बैठ कर खाते। कितनी सत्यानाश कर रही हैं। चढ़ने के बदली और ही गिरते हैं। (मु.11.4.72 पृ.2 अंत)	Download
81	बाप कहते हैं इस समय हरेक दुर्योधन और द्रौपदियाँ हैं। दुर्योधन, द्रौपदी को नंगन करते हैं। ..... द्रौपदियाँ तो वास्तव में सभी ठहरीं। कुमारी अथवा माता सभी द्रौपदियाँ हैं। कीचक तो ढेर हैं जो पिछाड़ी पड़ते हैं। ..... कीचक आदि की अभी की बात है। (मु.7.5.73 पृ.2 मध्य)	Download
82	द्रौपदी पुकारती है कि बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। हम पवित्र बनकर कृष्णपुरी में जाने चाहती हैं। कन्याएँ भी पुकारती हैं- माँ-बाप हमको तंग करते हैं, मारते हैं कि विकारी बनना ही होगा। (मु.1.5.72 पृ.1 मध्य)	Download
83	द्रौपदी कोई एक थोड़े ही हैं। हजारों करोड़ों नंगन होती रहती हैं। सभी नहीं पुकारते हैं। जिनको बाप की डायरैक्शन मिलती है पावन बनने लिये उनको पतित होने तंग करते हैं तो पुकारती हैं। (मु.1.3.69 पृ.1आदि)	Download

84	तुम्हारे में भी (नं.वार) कोई तो बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि रह जाते हैं। तुम जानते हो कितने कपूत बच्चे हैं। ब्रह्माकुमार कहलाने वाले भी कपूत हैं। उनसे तो साधु लोग अच्छे हैं। पवित्र रहते हैं। समझू हैं। यहाँ तो ऐसे-ऐसे हैं जो पतित दुनियाँ वालों से भी बदतर हैं। (मु.1.10.73 पृ.3 अंत)	Download
85	कन्याएँ सर्विस पर जाती हैं तो कीचक (ब्रह्माकुमारी के) पिछाड़ी में पड़ते हैं। फिर लिखा है भीमसेन ने कीचकों को पकड़ा है। कीचक माना एकदम डर्टी ब्रूट्स, जो पिछाड़ी पड़ते हैं। कीचक आदि की अभी की बात है। इस समय सभी द्रौपदियाँ, कीचक, दुर्योधन हैं। आसुरी सम्प्रदाय हैं। इसकी बहुत सम्भाल करते रहना है। अगर बाप के पास आये फिर कीचक बने तो पिता (पता) नहीं धर्मराज बन क्या हाल करूँगा! (मु.7.5.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
86	बाबा कहते हैं मैं एक-2 आत्मा को सकाश देता हूँ। सामने बैठ लाइट देते हैं। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। (मु.12.4.68 पृ.4 मध्य)	Download
87	पांडवों को गार्ड बनाकर शक्तियों की रखवाली के लिए निमित्त बनाया हुआ है। पांडवों को पीछे रहकर शक्तियों को आगे करना है। गाइड नहीं बनना है। गार्ड बनना है। जब पांडव गाइड बनते हैं तो गड़बड़ होती है। इसलिए पांडव सेना को गार्ड बनना है।(अ.वा.2.4.70 पृ.235 आदि)	Download
88	बाबा बहुत कड़े-2 अक्षर देते हैं। देवियों को भी कटारी, इतनी भुजाएँ क्यों देते हैं? जैसे रावण को भुजाएँ दी हैं वैसे देवियों को भी दी हैं। तुमको तो इतनी भुजाएँ हैं नहीं; परंतु रावण सम्प्रदाय है ना; इसलिए भुजाएँ भी दे दी हैं। रावण सम्प्रदायवासी ही उनकी पूजा करते हैं। देवियों की पूजा गोया रावण की पूजा। फिर इनसल्ट कितनी करते हैं। देवियों को सजाकर पूजा आदि कर फिर कहते हैं डूब जा। नहीं डूबती तो ऊपर चढ़कर भी डुबोते हैं। कितनी नॉनसेन्स बुद्धि, आसुरी बुद्धि है। (मु.7.4.68 पृ.2 आदि)	Download
89	गुड़ियों के खेल में इतने मस्त कि यदि कोई (बाप के) घर का सही रास्ता बतावे तो कोई सुनने के लिए तैयार नहीं। (अ.वा.19.10.75 पृ.201 आदि)	Download
90	धर्मसत्ता और राज्यसत्ता दो टुकड़ों में बट जाती है इसलिए द्वापर हो जाता है। (अ.वाणी 30.9.75 पृ.137 आदि)	Download
91	भारत तो है मोस्ट बेगर। भारत अब काँटों का जंगल है। काँटों की शैया पर दिखाते हैं न। भीख माँग रहे हैं। तो यह भी सबसे भीख माँगते रहते। भारत की दुर्दशा है न। भारत बिल्कुल सॉलवेंट था, अभी तो कंगाल है।(मु.2.11.73 पृ.3 अंत)	Download
92	पूज्य-पुजारी, पावन-पतित भारत ही बनता है। बाकी तो हैं बीच में। ..... गाते हैं पतित-पावन, तो ज़रूर पतित हैं ना। भारत पावन था, अब पतित है। (मु.7.9.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
93	इस (कलियुगी शूटिंग के) समय वह (कृष्ण उर्फ ब्रह्मा) कहाँ होगा? ज़रूर बेगर (में प्रविष्ट) होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बेगर के रूप में है। (मु.21.9.74 पृ.2 मध्य)	Download